RESEARCH PAPER | Education | Volume : 4 | Issue : 8 | August 2014 | ISSN - 2249-555X

छत्तीसगढ़ बोर्ड की कक्षा 10वीं के गद्यों का सौन्दर्यात्मक विश्लेषण

(Chhatisgarh Board Ki Kaksha Dasvi Ke Gadhyon Ka Saundaryatmak Vishleshan)

KEYWORDS

Dr. SONIA STHAPAK
ASSISTANT PROFESSOR, GGV, BILASPUR,C.G.

JAGDISHWAR
Scholar, GGV, BILASPUR,C.G.

ABSTRACT प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने छत्तीसगढ़ बोर्ड की कक्षा दसवीं की हिन्दी पाठ्यपुस्तक का सौन्दर्यबोधात्मक विश्लेषण किया है, जिसका मुख्य उद्देश्य पाठ्यपुस्तक में वर्णित गद्यांश में सौन्दर्यबोधक तत्वों का विश्लेषण करना था, जिसके तहत शोधकर्ता ने एक विशिष्ट प्रारूप अपनाया। इस विशिष्ट प्रारूप के तहत सौन्दर्यबोधात्मक विश्लेषण करने के बाद शोधकर्ता ने पाया कि पाठ्यपुस्तकों के गद्यांश में सौन्दर्यबोधात्मक तत्वःशब्द, लोकोक्ति/मुहावरा, कलापक्ष और भावपक्ष का सीमित प्रयोग किया गया है। इसके सीमित प्रयोग के फलस्वरूप पाठ्य सामग्री छात्रों में समुचित रूचि जागृत करने में सक्षम प्रतीत नहीं होती है। हिन्दी भाषा के प्रति छात्रों के घटते रूझान को देखते हुए शोधकर्ता यह भी महसूस करते हैं कि यदि पाठ्यपुस्तक में सौन्दर्यबोधक तत्व का उचित प्रयोग किया जाये तो बहुत संभव है कि छात्रों का हिन्दी पाठ्यपुस्तक के प्रति खोया हुआ रूझान वापस जागृत किया जा सके। इसके द्वारा हिन्दी भाषा को सरस, प्रवाहपूर्ण और जनप्रिय भी बनाया जा सकता है।

भूमिका :
''निज भाशा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाशा ज्ञान के मिटे न हिय को सूल।।''

भारतेन्दु जी उपर्युक्त पंक्तियों में बड़े ही स्पश्ट रूप से यह कह रहे हैं कि अपनी भाशा की उन्नति से ही अपने राश्ट्र व समाज की उन्नति हो सकती है। बिना अपनी भाशा की उन्नति से देष की उन्नति नहीं हो सकती। यह उसी प्रकार है जिस प्रकार बिना अपनी भाशा के ज्ञान से हृदय व मन को संतुश्टि नहीं मिलती है।

अर्थात प्रत्येक भाशा केवल भाशा नहीं होती, बल्कि वह समाज, संस्कृति, इतिहास, राश्ट्र की अस्मिता और उसके भावी लक्ष्यों की अभिव्यक्ति का माध्यम भी होती है। हिन्दी मात्र एक भाशा ही नहीं, भारतीय संस्कृति की सबल, समर्थ और सषक्त संवाहिका है। डॉ. परमानन्द पंचाल का अभिमत है कि, ''हिन्दी वास्तव में किसी एक ही भाशा अथवा बोली का नाम नहीं है, अपितु एक सामाजिक भाशा परम्परा की संज्ञा है, जिसका आकार–प्रकार हिन्दी की विभिन्न उपभाशाओं, बोलियों के ताने–बाने द्वारा निर्मित हुआ है। इस प्रकार हिन्दी अपनी बोलियों और उपभाशाओं का समश्टि रूप ही है।''

हिन्दी का महत्व राश्ट्र या राजभाशा के रूप में नहीं बल्कि इसलिए है कि वह जनभाशा है। हिन्दी में अपार क्षमता है। भाशा विज्ञान की दृश्टि से हिन्दी संप्रेशणषीलता और सरलता में विष्व की श्रेश्ठतम भाशा है। इसकी संष्लेशणात्मक प्रवृत्ति की क्षमता के कारण यह उच्च स्तर से कार्य व्यवहार, विचार–विमर्ष और अभिव्यक्ति का श्रेश्ठ माध्यम है। किसी भाशा का यदि मानकीकरण रूकता है तो वह भाशा विस्तारित नहीं हो पाती है, इसलिए हिन्दी में भी मानकीकरण की लचीली प्रक्रिया होती रहती है। उसी प्रकार ज्ञान–विज्ञान को अभिव्यक्ति देने की प्रक्रिया में किया जाने वाला भाशिक परिवर्तन ही भाशा का आधुनिकीकरण है। कोई भी भाशा सार्वजनिक रूप से चलन में तभी आ सकती है जब वह राज–काज और साहित्य के अलावा विज्ञान व व्यवसाय की भाशा बन जाये, अर्थात उसका उपयोग प्रयोजन मूलक भाशा के रूप में हो। हिन्दी भाशा में युग परिवर्तन की इन अपेक्षाओं और आकाँक्षाओं को सफलतापूर्वक पूर्ण करने का सामर्थ्य है जिसके बल पर नवभाशा व्यवस्था के इस संक्रमण काल में हिन्दी को समूचे विष्व में स्थापित कर सकते हैं, इसके लिए यह आवष्यक है कि अपने–अपने ज्ञान क्षेत्र और कार्य क्षेत्र में हिन्दी के प्रयोग सम्बन्धित वांग्मय के विकास जो कार्य हो रहा है उसको अद्यतन एवं समय और समाज की आवष्यकताओं एवं अपेक्षाओं के अनुकूल सृजित करें। हिन्दी के सन्दर्भ में पारिभाशिक एवं तकनीकी स्थापित अथवा प्रस्ताविक षब्दों की कठिनता की दुहाई देकर न अपनाने की प्रवृत्ति गलत है। वास्तव में तात्विक दृश्टि से देखा जाये तो षब्द सरल और कठिन नहीं होते, बल्कि परिचित अथवा अपरिचित होते हैं। बदलाव की इन प्रवृत्तियों को यदि हम यथा समय समझ लेते हैं तो मषीनीकरण अथवा तकनीकी क्रॉंति के इस युग की जरूरतों एवं आकाँक्षाओं के अनुरूप इसका सफल नियोजन अवष्य कर सकते हैं।

भूमण्डलीकरण के इस दौर में निःसंदेह हिन्दी आज भारत तक ही सीमित नहीं है, अपितु विष्व के विराट फलक पर अपने अस्तित्व को आकार देते हुए एक विष्व भाशा के रूप में तेजी से उभर रही है, फिर भी कुछ बातों पर गौर करना आवष्यक है। सूचना प्रोद्यौगिकी हमारे पूरे सामाजिक व्यवहार, सोच और संस्कारों के साथ–साथ कला, साहित्य और भाशिक व्यवहार को भी प्रभावित कर रहा है। आज मीडिया और भूमण्डलीकरण के नियंताओं ने हमारी भाशा को बिगाड़ दिया है। ऐसा लगता है जैसे किसी साजिष के तहत खिचड़ी भाशा बनाई जा रही है।

हिन्दी के प्रचार–प्रसार करने के लिए हिन्दी का सरलीकरण व सौन्दर्यकरण भी आवष्यक है, अर्थात षुद्ध व्याकरण सम्मत, सरल हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देना होगा। उसी प्रकार अनुवाद को सरल बनाने हेतु षब्दानुवाद के बाद उसका सरल भावानुवाद करने से हिन्दी को अपनाने से सहायता मिलेगी। इसके लिए हिन्दी के साहित्यकारों और बुद्धिजीवियों को भारतीय भाशाओं के प्रति उदार नीति अपनानी होगी और अन्य भारतीय भाशाओं को भी साथ लेकर चलना होगा।

हिन्दी षब्दों का लोक तत्व उसका सुन्दर लोकतंत्र है जिसकी मर्यादा और गरिमा का ध्यान रखना नितांत जरूरी है क्योंकि हिन्दी में लोकतान्त्रिक चेतन निहित है। आज हिन्दी को सद्भाव, सौहार्द, सामन्जस्य एवं सम्मानजनक संतोशप्रद वातावरण की आवष्यकता है ताकि हिन्दी का चतुर्मुखी विकास सम्भव हो सके। इसलिए सूझ–बूझ से अनुकूल माहौल बनाने की आवष्यकता है।

प्राचीन काल की षिक्षा व्यवस्था के बारे में अध्ययन करने से मिलता है कि प्राचीन काल में हिन्दी पाठ्यवस्तु व पाठ्यपुस्तकों का छात्र बड़ी तल्लीनता व रूचि के साथ अध्ययन करते थे। अध्ययन के समय भावपक्ष का रसपान करते थे। पाठ्यपुस्तक के मूलभूत सिद्धान्तों, नियमों व आदर्षों को अपने जीवन व व्यवहार में ढालते हुए अनुसरण करते थे किन्तु वर्तमान समय की षिक्षा व्यवस्था के बारे में अध्ययन करने से मिलता है कि प्राचीन काल की तरह छात्रों की हिन्दी पाठ्यपुस्तक को पढ़ने में रूचि अब बहुत कम मिलती है। छात्र गद्य की पाठ्यपुस्तक को पढ़ने में रूचि बहुत ही कम लेते हैं। छात्र गद्य के भावार्थ को अच्छी तरह बहुत कम समझ पाते हैं, भावार्थ को न समझने का मूलभूत कारण पाठ्यवस्तु में कहीं क्लिश्ट षब्द का प्रयोग हो सकता है, तो कहीं–कहीं अंग्रेजी भाशा के षब्दों का प्रयोग और कहीं क्षेत्रीय बोलियों के षब्दों का प्रयोग किया जाना हो सकता है। पाठ्यपुस्तक में सार्थक षब्दों का अभाव रहता है और यह षब्दों का अभाव ही छात्रों के अन्दर अरूचि पैदा कर देता है। सार्थक षब्द ही हिन्दी पाठ्यपुस्तक के सौन्दर्यबोधक षब्द हैं। हिन्दी पाठ्यपुस्तक को लोकप्रिय बनाने के लिए पाठ्यपुस्तक में सौन्दर्यबोधक तत्व जैसे भाशा, मुहावरे/लोकोक्ति, भाव–पक्ष और कला–पक्ष का समावेष होना आवष्यक है।

हिन्दी पाठ्यपुस्तकों में दो मुख्य विधा गद्य और पद्य हैं। गद्य के सौन्दर्य बोधक तत्व प्रभावषाली षब्द, भाशा, मुहावरा, लोकोक्ति, तत्सम, तत्भव, भावपक्ष और कलापक्ष हैं।

संक्रियात्मक परिभाशा :
सौन्दर्यबोध :
हिन्दी पाठ्य पुस्तक में जिन तत्वों के माध्यम से पाठ्यवस्तु की सुन्दरता, सरलता व सार्थकता सदैव परिदृष्य परिलक्षित और दृष्यमान होती हैं उसे सौन्दर्यबोध कहते हैं। गद्य में सौन्दर्यबोधक तत्व के रूप में षोधकर्ता द्वारा षब्द, मुहावरा, भावपक्ष और कलापक्ष का चुनाव किया गया है।

षोध प्रष्न :
षोधकर्ता इस षोध पत्र के अन्तर्गत निम्नलिखित षोध प्रष्नों का हल खोजने का प्रयास किया है।

Volume : 4 | Issue : 8 | August 2014 | ISSN - 2249-555X

(1) पाठ्य पुस्तक में सौन्दर्य बोध का क्या महत्व है?
(2) क्या षब्दों का प्रयोग भी भाशा को सुन्दर बनाता है?
(3) क्या मुहावरे पाठ्य वस्तु को प्रभावी बनाने में सक्षम हैं?
(4) क्या दसवीं की पाठ्य पुस्तक में उपयुक्त भाशा षैली का प्रयोग किया गया है?
(5) पाठ्य वस्तु में भावपक्ष को कैसे समावेषित किया गया है?

प्रविधि :
सौन्दर्यात्मक विष्लेशण :
गद्याँष के अन्तर्गत किसी कहानी, संस्मरण, उपन्यास और निबन्ध को पढ़ने के बाद उसमें वर्णित प्रभावषाली षब्द और सम्मिलित लोकोक्तियाँ/मुहावरों का अध्ययन किया गया है। तत्पष्चात गद्याँष में समावेषित कलापक्ष और समाहित भावपक्ष का अध्ययन किया गया है। इन उपर्युक्त बातों के साथ गद्याँष का निम्नलिखित प्रारूप के तहत सौन्दर्यात्मक विष्लेशण किया गया है :–

क्र.सं.	पाठ का नाम	गद्य	सौन्दर्यबोधक तत्व			
		गद्याँष	षब्द	मुहावरा	भावपक्ष	कलापक्ष

प्रस्तुत षोध पत्र में षोधकर्ता को निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए –
हिन्दी पाठ्य पुस्तक में सौन्दर्य बोध का महत्व :
जगत में कोई भी व्यक्ति यदि लोकप्रिय होता है तो अपने अन्दर विद्यमान आत्मषक्ति से, यही आत्मषक्ति उसके अन्दर छिपे अनोखे गुण का परिणाम होती है। यही अनोखा गुण व्यक्ति का आभूशण होता है जो उसका सौन्दर्य कहलाता है। एक महापुरूश का आभूशण महानता, एक संत का आभूशण सज्जनता, एक वै. ज्ञानिक का आभूशण नवीन सृजनता, एक वक्ता का आभूशण वाणी की प्रभावपीलता, एक षिक्षक का आभूशण षिक्षण–कौषल की परिपूर्णता, एक विद्यार्थी का आभूशण लगन एवं अनुषासनषीलता इत्यादि होते हैं। उसी प्रकार एक पाठ्य पुस्तक का आभूशण पाठ्य पुस्तक की प्रभावषीलता, छात्र व पाठक प्रियता होती है। पाठ्य पुस्तक ऐसी हो जिससे विद्यार्थियों में राश्ट्र की भावना, परोपकार की भावना, समाज कल्याण की भावना, संस्कृति संरक्षण की भावना, नैतिक मूल्यों के विकास की भ. ावना का विकास हो सके। उपर्युक्त भावना का समावेष पाठ्य पुस्तक में सौन्दर्य के महत्व को अवगत कराती है। सौन्दर्य के अभाव में पाठ्य पुस्तक नीरस प्रतीत होती है। अतः पाठ्य पुस्तक में सौन्दर्य का विषेश महत्व है। इसलिये यह जरूरी प्रतीत होता है कि हिन्दी पाठ्य पुस्तक में सौन्दर्यबोध व सौन्दर्यपरक षब्दों का अधिक से अधिक समावेष करें।

पाठ्यवस्तु में षब्दों के प्रयोग से भाशा का महत्व :
प्रस्तुत पाठ्यवस्तु में वर्णित षब्द गूढ़तम, षाष्वत, अवाक, पुश्यसलिला, आरोह, पताका, अनायास, अवलम्बित, कुव्वत, अलकस, बुत, क्षितिज, निरभ्र, हेम, अनु. रंजित, कौषेय, अनुग्रह, उर्जस्वित, तुरंग और पर्जन्य जैसे षब्दों के प्रयोग से पाठ प्रभावषाली हो जाता है। पाठ्य पुस्तक में षब्दों के प्रयोग से पाठ्यवस्तु की भाशा षैली सुन्दर और प्रभावषाली हो जाती है। षब्द ही किसी भाशा का मुख्य आधार हैं। उचित षब्दों के अभाव में भाशा की सुन्दरता फीकी पड़ जाती है।

पाठ्यवस्तु में मुहावरों की महत्ता की व्याख्या :
प्रस्तुत पाठ में वर्णित 'भारती बेहया होना', 'उठ खड़े होना', 'झुंझला उठना', 'अत्याचार का दमन करना', 'पीठ फेरना', 'हरी धानी क्यारियाँ दौड़ाई', 'फावड़े न टिकाना', 'धूल की नोक पर चलना', 'मौत का परवाना', 'तिल–तिल करने का', 'कोड़ों की चोट सीने पर झेलना', 'दिन–रात पसीना बहाना', 'थका माँदा जीवन', 'धर्म का झंडा फहराना', 'तेली का बैल', 'खून–पसीना एक करना' और 'तृण से ताड़ बनना' इत्यादि मुहावरों का प्रयोग किया गया है। ऐसे मुहावरों के प्रयोग से पाठ की सार्थकता बढ़ जाती है और पाठ में प्रभावषीलता झलकती है। मुहावरा पाठ्यवस्तु को एक नया रूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इससे पाठ्य की सार्थकता बढ़ जाती है। मुहावरा छात्रों के अन्दर रूचि जागृत करने में अद्वि तीय भूमिका निभाता है। दसवीं पाठ्यपुस्तक में मुहावरों को समावेषित किया गया है परन्तु यह प्रयोग नाकाफी है, अतः षोधकर्ता की समझ से इसमें वृद्धि होनी चाहिए।

पाठ्यवस्तु में समावेषित कलापक्ष की व्याख्या :
दसवीं की हिन्दी पाठ्य पुस्तक के पाठ्यवस्तु के पद्याँष में सरस, प्रवाहपूर्ण और साहित्यिक भाशा का प्रयोग किया गया है। भाशा षैली के अन्तर्गत समास षैली, व्यास षैली, समीक्षात्मक षैली, भावात्मक षैली, गवेशणात्मक षैली, व्यंग्य प्रधान षैली, विवेचनात्मक षैली, वर्णनात्मक षैली, गीतात्मक षैली, कलात्मक षैली, चित्रात्मक षैली, प्रतीकात्मक षैली, बिम्ब विधान षैली तथा सरस, स्वाभाविक, प्रवाहपूर्ण, ओजमयी और चुटीली षैली का प्रयोग किया गया है जो कि अच्छी बन पड़ी है। परन्तु षोधकर्ता को फिर भी यह एहसास होता है कि कुछेक पाठों में कलापक्ष के समावेष को वह स्थान नहीं प्राप्त हुआ जैसा कि उसे होना चाहिए था।

पाठ्य पुस्तक में भावपक्ष की सार्थकता का वर्णन :
पाठ्य पुस्तक में भावपक्ष पाठ्यवस्तु के भावार्थ व सार्थकता से है। पाठ्यवस्तु का भावार्थ बताने में भावपक्ष विषेश महत्व रखता है। जिस पाठ्यवस्तु में भावपक्ष का अभाव रहता है, वह पाठ्यवस्तु नीरस व अर्थहीन प्रतीत होती है। अतः पाठ्यवस्तु की नीरसता को दूर करने के लिए भावपक्ष का विषेश महत्व है। अतः परिण ामतः हम कह सकते हैं कि दसवीं की पाठ्य पुस्तक में यद्यपि भावपक्ष का उचित समावेष है परन्तु उसे और प्रभावी बनाया जा सकता है।

किसी भी षोध का मुख्य उद्देष्य समस्या के परिणामों तक पहुँचना है। निश्कर्श वास्तव में षोध के वे परिणाम हैं जिन्हें संकलित विचारों के विष्लेशण व विवेचन के आधार पर प्राप्त किया जाता है। निश्कर्श किसी षोध के अंतिम पड़ाव में से एक बिन्दु है, जो षोध का मूल्यांकन करती है कि षोध की सार्थकता कितनी मूल्यवान है।

प्रस्तुत लघु षोध कार्य में षोधकर्ता भी प्राप्त परिणाम स्वरूप कुछ निश्कर्श निकालने में समर्थ हुआ है, जो निम्न प्रकार से हैं :
छत्तीसगढ़ माध्यमिक षिक्षा बोर्ड द्वारा अनुमोदित कक्षा दसवीं की हिन्दी पाठ्य पुस्. तक के अन्तर्गत गद्य में षब्द मुहावरा/लोकोक्ति, भावपक्ष और कलापक्ष का समावेष उचित तरीके से किया गया है फिर भी इस पाठ्य पुस्तक में कहीं–कहीं क्लिश्ट षब्दों का प्रयोग किया गया है। जो छात्रों के मानसिक स्तर के प्रतिकूल है। यदि इसमें सरल, सरस, समझपूर्ण और छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल षब्दों का प्रयोग किया जाता तथा गद्य के बीच–बीच में छात्रों के स्तर के अनुकूल दो–तीन पंक्ति की कविता या दोहा सम्मिलित करने पर, गद्य की सार्थकता बढ़ सकती थी जिससे पाठ्यवस्तु की सौन्दर्यता प्रभावषाली हो सकती थी। अतः हिन्दी पाठ्यवस्तु को सौन्दर्य पूर्ण बनाने के लिए उचित सौन्दर्यबोधक तत्वों का समावेष होना चाहिए था जिससे पाठ्यवस्तु और अधिक आकर्शक, रूचिपूर्ण, प्रभावपूर्ण प्रदर्षित हो सके।

निश्कर्श :
प्रस्तुत षोध के परिणाम के आधार पर कहा जा सकता है कि यह षोध षिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। प्रस्तुत षोध के अन्तर्गत पाठ्य वस्तु में समावेषित पाठ्य पुस्तक का सौन्दर्यबोधात्मक विष्लेशण किया गया है जिससे हमको यह ज्ञात होता है कि पाठ्यवस्तु में सौन्दर्यबोधक तत्वों का विषेश महत्व है। इस अध्ययन के द्वारा निश्कर्श में मिलता है कि पाठ्यवस्तु में अधिक से अधिक सौन्दर्यबोधक तत्वों का समावेष किया जाना चाहिए जिससे छात्रों के अन्दर पाठ्यवस्तु को पढ़ने में रूचि जागृत हो और वे आनन्दपूर्वक पाठ्यवस्तु को पढ़ सकें। यदि पाठ्यवस्तु में सौन्दर्यबोधक तत्वों का समावेष कम रहेगा या पूर्णतः अभाव रहेगा तो छात्रों को पढ़ते समय अरूचि पैदा होगी जिससे वे हिन्दी पाठ्यवस्तु पढ़ने से दूर भागेंगे। अतः उनके इस दूर भागने की प्रवृत्ति को दूर करने के लिए पाठ्यवस्तु में सौन्दर्य बोधक तत्वों को सही तरीके से समावेषित किया जाये।

अतः कहा जा सकता है कि प्रस्तुत षोध छात्रों को अध्ययन करने में सरलता, सरसता और भावार्थ समझने में सहायता प्रदान करता है। छात्रों के अन्दर सक. ारात्मक दृश्टिकोण भरने में और षिक्षकों को अध्यापन कार्य करते समय बच्चों में रूचि जागृत करने में विषेश महत्व रखता है। पाठ्यवस्तु में सौन्दर्य बोधक तत्वों के उचित प्रयोग से हिन्दी साहित्य को नवीन दिषा और हिन्दी साहित्य को षिखर पर पहुँचाने में लाभदायक सिद्ध हो सकता है।

''रोषन रहे हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान, जो मेरी परिभाशा है।
एकता, अखण्डता का सन्देष देती, लोकप्रिय हिन्दी भाशा है।।''

REFERENCE ▪ कुमार, पी. (1967), सौन्दर्यशास्त्र के तत्व, दिल्ली : राजकमल प्रकाशन। द्य ▪ तिवारी, टी. (1987), प्रगतिशील कविता में सौन्दर्य चिन्तन, नईदिल्ली : भारतीय भाषापीठ प्रकाशन। द्य ▪ तिवारी, आर. (1992), हिन्दी का गद्य साहित्य। द्य ▪ दीक्षित, सी.एल. (1989), आधुनिक काव्य में सौन्दर्य बोध के विविध आयाम, दिल्ली : सबरी संस्थान प्रकाशन। द्य ▪ नरसिंहाचारी, एस.टी. (2000), सौन्दर्यशास्त्रीय समीक्षा, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन। द्य ▪ नगेन्द्र, (संवत 2031), भारतीय सौन्दर्यशास्त्र की भूमिका, दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज। द्य ▪ पाण्डेय, आर.एस. (संवत 2064), हिन्दी शिक्षण, आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन। द्य ▪ मेघ, आर.के. (1980), साक्षी है सौन्दर्य प्राश्निक, नई दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग। द्य ▪ मालवीय, एस. (1986), हिन्दी काव्य में उरोज सौन्दर्य, नई दिल्ली : अयन प्रकाशन। द्य ▪ मिश्र, डी. (1987), जायसी के ग्रन्थों का काव्य शास्त्रीय सौन्दर्य, लखनऊ : नवयुग ग्रंथागार। द्य ▪ मेघ, आर.के. (1992), कामायनी और उसकी मनस्सौन्दर्य एवं सामाजिक भूमिका, नई दिल्ली : यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन। द्य ▪ मन्हास, जे.एस. (1986), सौन्दर्यबोध शास्त्रीय विश्वकोष की भूमिका, नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन। द्य ▪ रोहिताश्व (1980), समकालीन कविता मार्क्सवादी सौन्दर्यशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में, इलाहाबाद : प्रभात प्रकाशन। सिंह, जी.पी. (1989), महादेवी वर्मा की काव्यसौन्दर्य भावना, इलाहाबाद : सुपर फाइन प्रिंटर्स। द्य ▪ हाउस बाफना, पी. (1983), सौन्दर्यशास्त्र और आधुनिक हिन्दी कविता, दिल्ली। द्य